

- मनचंगा तो कठौती में गंगा = मन पवित्र हो तो आश्चर्यजनक बातें भी हो सकती हैं।
- मरता क्या न करता = विवशता में मनुष्य को अच्छा-बुरा सब कुछ करना पड़ता है।
- मान न मान, मैं तेरा मेहमान = 1. यह बात तो जबरदस्ती नाता जोड़ने वाली है।
2. जबरदस्ती किसी के गले पड़ना।
- मियाँ की जूती, मियाँ का सिर = 1. किसी का आतिथ्य उसी के धन से करना।
2. किसी के तर्क का जवाब उसी के तर्क से देना।
- मियाँ बीबी राज़ी, तो क्या करेगा काजी = यदि दो लोग आपस में एकमत हों तो बाहर के लोग कोई हानि नहीं पहुँचा सकते।
- मुद्दई-सुस्त, गवाह चुस्त = जिसका काम है, वह व्यक्ति तो सुस्त है किंतु उसके समर्थक सजग हैं।
- मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक = कोई व्यक्ति वहीं तक प्रयत्न कर सकता है जहाँ तक उसकी क्षमता होगी।
- मुँह में राम, बगल में छूरी = धूर्त व्यक्ति ऊपर से बोलचाल में तो अच्छा लगता है किंतु वह कपटी व दुर्भावना वाला होता है।
- रस्सी जल गई पर ऐंठन न गई = ऐश्वर्य या सत्ता समाप्त हो जाने पर भी व्यक्ति की अकड़ नहीं जाती।
- राम मिलाई जोड़ी, एक अंधा एक कोढ़ी = वह अज्ञानी व्यक्ति जो पुरानी रूढ़ियों व रीतियों का आँख बंद करके पालन करता है और ऐसे ही व्यक्ति का उसे साथ मिल जाए।
- लातों के भूत बातों से नहीं मानते = 1. दुष्ट व्यक्ति विनम्र व्यवहार या प्रार्थना करने पर भी अनुकूल नहीं होते, कठोर व्यवहार से ही नियंत्रित होते हैं।
2. दुष्ट लोग बिना दंड पाये उचित व्यवहार नहीं करते।
- समर्थ को नहीं दोष गुसाईं = संसार में समर्थ व्यक्ति को कोई दोष नहीं देता, केवल निर्बल व्यक्ति को ही दोष दिया जाता है।
- सावन के अंधे को हरा ही हरा सूझता है = प्रत्येक व्यक्ति अपनी स्थिति के अनुसार दूसरे को भी वैसा ही समझता है।
- सांप मरे, न लाठी टूटे = इस प्रकार काम हो जाए कि नुकसान न हो।